एक टुकड़ा ज़िन्दगी

कावेरी का ब्याह□बाऊजी के हाथ में कार्ड पर नजर पड़ते ही मैं उछल पड़ी थी।मैं अपनी खुशी को रोक ही नहीं पाई।बाऊजी के हाथ से कार्ड को लगभग छीनते हुए रसोई की ओर दौड़ी थी– मां□कावेरी के ब्याह का कार्ड आया है।

–तो चिल्ला क्यों रही है।ब्याह का कारड है मातम का तो नहीं।

–शुभ–शुभ बोल भली मानस□बाऊजी मेरे पीछे–पीछे आ गए थे– खुशी का मौका है ऐसा नहीं कहते।

–खुशी होगी उनके लिए।मां आटा सने हाथों को नचाती हुई बोली– मैं न कहती थी सब कुछ चुपके से हो जाएगा।तुम हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहो।

मां की बात का पूरी तरह से क्या अर्थ है मेरी समझ में नहीं आया था।मैं बाऊजी के चेहरे की ओर देखने लगी। शायद उनके जवाब से ही मां की बात का अर्थ पता चल जाए। पर बाऊजी कुछ नहीं बोले थे।वहीं मूढ़े पर बैठ फिर से कार्ड पर नज़र दौड़ाने लगे।

–कब का है ब्याह □मां रसोई के भीतर से ही चीखी।

–ग्यारह तारीख का। बाऊजी उसी सहजता से बोले।

–कोई अपना होता है महीना–दो–महीना पहले चिट्ठी लिख भेजता है।मां बुदबुदाती हुई बाहर आई थी।

–आजकल शादी–ब्याह के लिए महीना–दो–महीना कौन रूकता है।लड़की–लड़का पसन्द आया नहीं और चौथे दिन... ।

–बस रहने दो।मां ने बाऊजी की बात बीच में ही काट दी– हमेशा दूसरे की तरफदारी मत किया करो।

मां और बाऊजी की लफड़ेबाजी वहीं छोड़ मैं भीतर चली आई थी।

कमरे में आते ही कावेरी और चाची का चेहरा आंखों के सामने आ खड़ा हुआ। पूरे सात वर्ष हो चले हैं उन्हें देखे हुए। अब तो बड़ा परिवर्तन आ गया होगा दोनों में।

चाचा जिन्दा थे तब साल में तीन चक्कर तो लग ही जाते थे।हम नहीं जाते थे तो उनका ही आना हो जाता था। पर चाचा के बाद न हम में से कोई गांव गया न चाची ही इधर आई।

बाऊजी ने कई बार गांव जाने की बात चलाई है। परन्तु जब भी यह बात चली मां का एक ही वाक्य होता– मैं तो कब से कह रही हूं एक चक्कर लगा आओ। विधवा हो गई जे मतलब तो नहीं कि सारी जमीन हड़प्प ले। मां की इस बात से बाऊजी बिल्कुल ठंडे पड़ जाते। गांव जाने की बात तो एकदम से टाल जाते।

मां का बस चलता तो तभी जब चाचा की मौत पर वह और बाऊजी गांव गए थे सब कुछ निबटा आती। परन्तु उस वक्त मां ने उनका लिहाज़ कर दिया था। यह बात मां ने ही कही थी एक बार।

बड़ा अजीब लगता है मां की ये बातें सोच कर। यों मां और चाची में ज्यादा अन्तर नहीं है। एक नहला है तो दूसरी दहला। यह बात रिश्तेदारी में भी खूब मशहूर है। पिछली बार गांव में ही जब इस बात का भेद खुला तो मेरा और कावेरी का हंसी के मारे बुरा हाल हुआ था। मां और चाची सामने ही बैठी थीं जब जमुना काकी ने यह बात कह दी थी और हम दोनो खी–खी कर के हंसने लगी थीं।

–अब चुप भी करेगी कि नहीं निगोड़ी□ मां यह बात न कहती तो मेरी बत्तीसी पता नहीं कब तक निकलती रहती। मां से पहले मेरी नजर चाची पर गई थी और मैं चाची की गोल–गोल आंखों का सामना ज्यादा देर के लिए नहीं कर पाई थी।

अब भी चाची का वह चेहरा अक्सर आंखों के आगे घूम जाता है। कभी तो खुद पर हंसी आ जाती है और कभी खुद से ग्लानि होने लगती है।

–तुझे भी साथ चलना है। कपड़े बगैरा हैं न तेरे पास□ बाऊजी कब भीतर आ गए थे पता ही नहीं चला। तो जाने का प्रोग्राम बन ही गया। मां का क्या पता ऐसे मौके पर भी इनकार ही कर देती।

–आपको याद है बाऊजी आपने पिछली बार कब कपड़े लेकर दिए थे□ मैंने उलाहना देते हुए कहा था। यों भीतर से मेरी हंसी छूट रही थी। फेरीवाले से हर माह एक सलवार या कमीज़ का टुकड़ा मां ले ही देती है। पर इन सब बातों का बाऊजी को क्या पता। नया पहन लो पुराना पहन लो उनके लिए सब बराबर।

जरा रूक कर बोले थे बाऊजी–शायद मंगू के ब्याह पर□

–मंगू के ब्याह को कितना अरसा हो गया याद है□ पूरा एक साल दो महीने। मैंने हाथ की अंगुलियों को जरा ऊपर उठाते हुए कहा।

–हां री बाऊजी का स्वर कहीं से दब सा गया था। मानो उन्हें इस बात का क्षोभ हो रहा हो लेकिन अगले ही पल उनका लहजा बदल गया– तूने खुद भी तो नहीं कहा कभी। अब छोटी तो नहीं रही तू□ कावेरी जितनी होने को आई है। आखिरी वाक्य बाऊजी ने शायद जान–बूझ कर कहा था। मैं झेंप सी गई। चुप बनी रही तो बाऊजी ही बोले– सवेरे चलेंगे बाज़ार।

–ये बाज़ार किसलिए जाना हो रहा है□मां भीतर आती हुई बोली थी। अब शामत आई मेरी। मैंने हाथ के इशारे से बाऊजी को चुप रहने का संकेत दे दिया।

तीन दिन पड़े थे गांव जाने को। और इन तीन दिनो में घर भर में कावेरी के ब्याह की ही चर्चा चलती रही। बाऊजी जितने साधारण तरीके से बात शुरू करते मां हर बात को तूल देकर जमीन की बात ले बैठती। जमीन का चक्कर न हो तो मां शायद कभी गांव न जाए।

कावेरी के लिए एक सुच्चे गोटे वाली साड़ी जिसे मां ने कभी घर पर ही टांका था और एक सौ एक रूपया नकद देने की बात तय हुई थी। हालांकि बाऊजी नकद ज्यादा देना चाहते थे पर मां ने साफ–साफ कह दिया था–तीन–तीन का आने–जाने का किराया–भाड़ा भी तो कम नहीं लगेगा।

मन तो हुआ था कह दूं मां ज़मीन का फैसला हो गया तो किराए–भाड़े की वसूली अपने–आप हो जाएगी।

जाते हुए बाऊजी खुश तो लग रहे थे पर एक दबा दबा डर भी था उनके भीतर जो उनकी बातों से जाहिर हो रहा था– तुम जमीन की बात मत छेड़ना। मौका ही कहां है ऐसी बात करने का। अच्छा है बेचारी का बोझ कम होने जा रहा है। वैसे मैं खुद ही उससे अपने हिस्से की बात कर लूंगा। बाऊजी रास्ते भर कहते गए थे और मैं चुपचाप सुनती चली गई थी। अजीब बात है मां और चुप। मैं रह–रह कर मां के चेहरे की ओर देखने लगती। मां वाकई में चुप थी। पर उसका चेहरा कठोर होता चला गया था।

मां और बाऊजी की बातों से दिमाग हटाने के लिए मैं बस की खिड़की से बाहर को देखने लगती। दूर–दूर तक फैले खेतों पर नज़र जाते ही गांव का सारा नक्शा आंखों के आगे घूम जाता। सहसा लगता दूर से कावेरी दौड़े चली आ रही है। पास आते ही वह मुझसे लिपट कर फूट–फूट कर रोने लगी है। उफ्फ□एक अजीब सी दहशत से भर उठती तो एक झटके से नजर बाहर के दृष्यों से हटा लेती।

कहीं गांव पहुंचने पर सच में तो ऐसा नहीं होगा। मैं नहीं सह पाऊंगी। चाचा की मौत के वक्त मेरा न जाने का कारण केवल यह नहीं था कि मेरी परीक्षाएं नज़दीक थीं बल्कि खुद ही टाल दिया था मैंने। मुझे लगा था मैं कावेरी का सामना नहीं कर पाऊंगी। अब पछता रही हूं । चली जाती तो उस बेचारी का बोझ तो हल्का हो जाता।

बस से पूरे सात घंटे का सफर और अभी दो घंटे बाकी। मुझे तो नींद की झपकी आने लगी थी। गांव पहुंचने पर बाऊजी ने हिलाया तो मैं हड़बड़ा कर उठ बैठी। बस से उतरते ही मैं आश्चर्य से भर गई। क्या यह वही गांव है जहां आज से सात–आठ वर्ष पहले हम आए थे। यह परिवर्तन गांव के शुरू में ही नज़र आया भीतर नहीं। गांव के बीचों–बीच

गोबर और कूड़े के ढेर अब भी अपनी सड़ांध दे रहे थे। इनसे बचते बचाते रिक्शावाले ने हमें चाची के दरवाज़े पर ला खड़ा किया।

चाची को देखते ही मैं आश्चर्य से भर गई। उभरे-उभरे गाल और गोल-गोल आंखों वाली चाची कहां गई? अब तो गाल और आंखें बुरी तरह से भीतर को धंस आई थीं।

मां से गले मिलने के बाद चाची मुझसे यों लिपटी कि मैं अपनी रूलाई रोक ही नहीं पायी। मुझे कंधे से पकड़े चाची मुझे भीतर ले आयी। कमरे में आते ही कावेरी पर जो नज़र पड़ी तो मैं अवाक्! कैसी तो थुल-थुल हुई पड़ी थी।

काफी कुछ मेरी कल्पना के उलट निकल रहा था लेकिन जितना आश्चर्य चाची को देख कर हुआ था उतना किसी भी बात पर नहीं।

हमें कमरे में छोड़ चाची चाय बनाने चली गई थी। सोचा था चाय खत्म होते ही कावेरी को लेकर कहीं बाहर निकल जाऊंगी। लेकिन बाद में पता लगा इसका तो बाहर आना-जाना बिल्कुल बंद। छत पर ही निकल चलना चाहिए। मैं सोच ही रही थी कि रसोई में से चाची की आवाज़ पड़ी- ऐ ... बिट्टो! इधर आ जा।

चाची की आवाज पर जितनी तेज़ी से रसोई की ओर गई थी दहलीज पर पहुंचते ही पांव एकाएक जम से गए। चाची पर नज़र पड़ते ही दिल फिर बैठ सा गया।

आ बैठ तो! इतने बरसों बाद मिली है चाची से बात करने को मन नहीं करता? सामने ही पीढ़े पर मैं छुई-मुई सी बनी जा बैठी।

-तू तो बहुत बदल गई है री! जो बात मुझे कहनी चाहिए थी वह चाची कह रही थी।

-आजकल क्या कर रही है तू? शहर तो बहुत बदल गया होगा। वो तेरी गंगा-मइया का क्या हाल है? खूब बुढ़ा गई होगी अब तो। रामेश्वर की छोकरी ब्याही गई कि नहीं? चाची पूछे जा रही थी और मैं छोटे-छोटे शब्दों में उत्तर दिए जा रही थी। इस बोझिल होते वातावरण को मां की आवाज़ ने बचा लिया था- देख री बिट्टो कौन आई है?

मैंने उचककर देखा उर्मिल थी। वह दूर से ही चिल्लाई- हाय री बिट्टो! और पास आते ही उसने मेरे दाएं गल पर चिकोटी काट दी- तू तो बहुत निखर आयी है री। अब तो तेरी शादी भी जल्दी हो जानी चाहिए।

-तेरी ही क्यों नहीं? मैंने कहा तो उर्मिल ठहाका मार कर हंस दी। मेरे करीब सरकती हुई बोली- जानती है लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं?

-क्या?

-अब सब कुछ अपनी जुबान से कैसे कह दूं। दो घड़ी चाची के पास बैठेगी तो सब जान जाएगी। उर्मिल ने व्यंग्यात्मक दृष्टि चाची की ओर फेंकी। छोटी-छोटी बात पर

उबलने पड़ने वाली चाची अत्यन्त सहजता से बोली– बस यही तेरी एक आदत है जो सबसे बिगाड़ बैठती है तू। हम सब तो सह जाएंगी लेकिन मरद लोग भी कभी तानों के गुलाम हुए।

चाची की बात पर मैं कुछ शंकित सी हो उठी थी।

–बस रहने दे चाची। यही सोच–सोच कर मरदों का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ा दिया हे तुम लोगों ने। तू देखना एक दिन नाक रगड़ता हुआ आएगा वह मेरे को लेने।

मेरे लिए एक विस्फोट था यह। उर्मिल उसी रौ में बोली– मैंने तो कावेरी से भी बोल दिया है निभती लगे तो ठीक वरना चली आना।

–ये क्या कह रही है तू। क्यों दूसरे को भी उलटी मति देती है। चाची सर से पांव तक कांपने लगी थी– तेरे को संभालने वाले तो चार लोग हैं उसे कौन संभालेगा।

मैं आगे बढ़ कर चाची को पकड़ न लेती तो वह अवश्य ही लड़खड़ा कर गिर जाती। उर्मिल तो जल्दी ही वहां से खिसकने को हुई।

रात छत पर कावेरी को घेरे बैठी थीं हम कि काकी आ गई– ऐ छोकरियों कोई ढोलकी भी बजेगी कि नहीं□

–यहां ढोलकी ही बज रही है काकी। मैंने कावेरी के थुलथुले बदन पर झापड़ जड़ दिया। एक जोरदार ठहाका सारे वातावरण में गूंज गया।

–ऐ बिट्टोरानी पहले तू ही गा दे। काकी ने कहा तो मेरे पांव तले से जमीन ही खिसक गई। ये शादी–ब्याह का गाना और मैं। एक अस्फुट सा स्वर मेरे मुंह से निकला था जो बड़ी आसानी से काकी के कानों तक पहुंच गया– फिर कोई डिस्को–विस्को ही सुना दे। काकी ने कहा तो मैं सन्न। इस डिस्को शब्द से काकी भी परिचित है।

आखिर कहां तक नखरे करती मैं। बहुत पहले किसी फिल्म में सुना एक गीत याद आ गया था –साडा चिड़ियां दा चम्बा वे बाबुल असां उड जाना–साडी लम्बी उडारी वे बाबुल केड़े देश जाना।

कावेरी की विदाई के बाद तो लगा था यह एक ऐसा वक्त होता है जब आदमी बुरी तरह से टूट जाता है। चाची को देख कर लग रहा था इतना तो वह चाचा की मौत पर भी न टूटी होगी। कितनी देर तक मैं जुड़ी–सिमटी चाची के पास बैठी रही थी।

रात चारपाई पर लेटते हुए बाऊजी बोले– सोच रहा हूं कल शाम की गाड़ी से लौट चलें।

–हां–हां क्यों नहीं□मां वही अपने पुराने अन्दाज़ में बोल उठी– अब क्या करना है यहां रूक कर।सारा काम निबट जो गया हे।

मां की बात का आशय मैं समझ गई थी।बाऊजी शायद समझते हुए भी अन्जान बन रहे थे।बाऊजी ने करवट ले ली।उन्हें सच में नींद आ रही है या फिर सोने का बहाना कर रहे हैं।

मेरी नींद तो कोसों दूर चली गई थी।अब सुबह होते ही कोई न कोई बवेला उठ खड़ा होगा।बाऊजी तो कुछ कहेंगे नहीं।मां अब अपने तरीके से सब कुछ निबट लेगी।

रातभर मैं सोचती रही थी कि सुबह उठते ही बाऊजी से कहूंगी –बाऊजी आप ही चाची से तरीके से बात करके सब निबटा क्यों नहीं लेते।लेकिन बाऊजी तो सुबह–सवेरे जाने कहां को निकल गए।

चारपाई से उतर मैं आईने के आगे जा खड़ी हुई।खूंटी से दुपट्टा खींच मैं रसोई की ओर चल दी।

मां और चाची रसोई में ही थीं।चाची अंगीठी पर चाय का पानी रखे हुए थी।मां मैला सा कपड़ा लिए जाली पर फेर रही थी। लगा मां जबरदस्ती काम में हाथ बंटाने का अभिनय कर रही है।

–ये सुबह सवेरे जेठ जी कहां चले गए□चाची मुझसे पूछ रही थी या मां से पता नहीं।मैं चुप बनी रही तो मां ही बोल उठी– अच्छा है चले गए।

मां की इस बात का अर्थ चाची भले ह ीन समझ पाई हो मैं तो समझ रही थी।जमीन की बात उठाने के लिए मां के पास इससे अच्व मौका और क्या हो सकता है।

–तुझे पता है छोटी हम आज शाम की गाड़ी से जा रहे हैं। जरा रूक कर मां ने कहा तो चाय का प्याला उठाते–उठाते मेरे हाथ वहीं रूक गए।

–आज शाम की गाड़ी से□चाची आश्चर्यचकित मां की ओर पलटी–नहीं–नहीं भौजी□इतनी जल्दी मैं आप लोगों को नहीं जाने दूंगी।और फिर अभी तो मेरे को आपसे बहुत बातें करनी हैं।

–बातें करनी हैं।तो वे बाते अब नहीं हो सकती क्या। मां का आकोश बढ़ता जा रहा था।

–आज शाम को मैंने दीन काका को बुलवाया हुआ है।

–वह किस लिए□मां के साथ–साथ मैं भी यह जानने को उत्सुक हो उठी थी।

भौजी सात बरस मैंने जमीन से काफी बनाया है। तुम लोगों ने मेरे लिए इतना किया मेरा भी तो कुछ फर्ज बनता है। जरा रूक कर बोली चाची– भौजी अब जमीन को तुम लोग संभाल लो तो मेरा बोझ उतर जाएगा।

–इसमें दीन क्या करेगा□

–भौजी मैं अपने हिस्से का आधा–आधा कावेरी और बिट्टो के नाम कर देना चाहती हूं।

–कावेरी और बिटटो के नाम□ इतना आश्चर्य मुझे नहीं हुआ था जितना मां को हुआ होगा– अभी तो तेरी सारी जिंदगी पड़ी है। मां के तेवर अब तक काफी बदल चुके थे।

–नहीं भौजी जब तक कावेरी के बाऊजी जिन्दा थे लगता था जिन्दगी बहुत लम्बी है । बड़े आराम से जी जा सकती है।पर अब ऐसा नहीं लगता।अब तो लगता है जिन्दगी बहुत छोटी रह गई है। सोचती हूं जो जितनी जल्दी हो सकता है करती जाऊं...।

–तू एक बार अच्छी तरह से सोच ले।

–अब क्या सोचना भौजी। चाची ने एक लम्बी उसांस भरी– आदमी जो भी करता है सब यहीं रह जाता है। बस नेकी साथ ले जाता है।कुछ कर जाऊंगी तभी तो नेकी साथ ले जाऊंगी। इसमें मैं दूसरे का नहीं अपना ही सोच रही हूं।

मां का आकोश मां का झगड़ा सब झेल जाती मैं। पर ये सब सहना मुश्किल हो गया था मेरे लिए।चाय का कप उठा कर मैं बाहर आंगन में चली आई थी।

... ...